स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा संबंधित विचार का तुलनात्मक अध्ययन:

(1) विषय प्रवेश (Introduction):

प्रस्तावित शोध का विषय **स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा संबंधित विचार का तुलनात्मक अध्ययन** है। यह दर्शन की अत्यंत महत्वपूर्ण शाखा शिक्षा दर्शन के अंतर्गत आता है, जो समकालीन भारतीय दार्शनिकों का केंद्रबिंदु भी है। भारतीय दार्शनिकों का मुख्य लक्ष्य शिक्षा समस्याओं का समाधान करना है एवं समस्याओं का मार्ग के लिए ही बहुत सारे उपाय को दिखलाना ही इनका कार्य रह चुका है। जो आज भी हम लोगों को उत्साह देता हैं। शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंगत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। जिसके द्वारा मानव अपना भौतिक एवं नैतिक विकास करते हैं। जो जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है एवं अपने आचार-विचार तथा रहन-सहन में परिवर्तन करता है। शिक्षा के सहायता से ही संसार में अर्थात आर्थिक ,भौतिक, सामाजिक ,सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है । जो दर्शन शिक्षा के संबंधित समस्याओं का दार्शनिक दृष्टिकोण से विवेचना करने में भी सक्षम है। दार्शनिक विधि शिक्षा दर्शन की ही विशेषता है। शिक्षा को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण तथ्य विद्या संबंधित सिद्धांतों में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, फलवाद , यथार्थवाद उल्लेखनीय है। यदि दर्शन जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करता है तो शिक्षा उस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है।

समकालीन भारतीय दार्शनिक शिक्षा व्यवस्था के सभी पहलुओं पर विचार करते हैं और उसका एक ऐसा सर्वांगीण चरित्र पर शक करने का प्रयास करते हैं, जिसमें शिक्षा के सभी विद्याओं , सभी प्रकार के पाठ्यक्रमों एवं शिक्षार्थी की सभी आवश्यकताओं को सभी प्रकार के विकास में उचित स्थान दे सके। समस्याओं को दार्शनिक विधि से ही सुलझाने का प्रयास केवल मात्र शिक्षा दर्शन कर सकता है। अत्यंत प्रेरणादायक स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन मानव के लिए है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में –“शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में घुसा दिया गया है और जो आत्मसात् हुए बिना वहाँ आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मंचाया करता है”। [1] आज समाज में ऐसी शिक्षा की चाहिए जो चरित्र का निर्माण करें, बुद्धि का विकास करें। शिक्षा से ही व्यक्ति अपने अपना पूर्ण विकास कर सकता हैं। विवेकानंद अपने जीवनदर्शन में शिक्षा के सबसे अधिक महत्व देते थे। उन्होंने यह भी बताए हैं कि हम भारतीय को तकनीकी शिक्षा के ऊपर जोर देना चाहिए। जिसके उद्योग धंधे विकसित हो सके।स्वामी

विवेकानंद ने व्यवहारिक शिक्षा के साथ साथ आध्यात्मिक शिक्षा पर भी बल दिया है। स्वामी विवेकानंद की गणना संसार के महान शिक्षा शास्त्रियों में भी की जाती है। स्वामी विवेकानंद ने भारत की उसी प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षण पद्धति को अपनाने पर बल दिया ,जिसमें गुरु और शिष्यों का शिक्षा संबंध में अत्यंत घनिष्ठ रहते हैं। स्वामी विवेकानंद के दर्शन शिक्षण में प्रकृतिवाद, आदर्शबाद तथा प्रयोजनवाद आदि सभी मुख्य दार्शनिक विचारों की झलक मिलती है । प्रकृति वादियों की भांति स्वामी जी ने बताया कि सच्ची शिक्षा प्रकृति के संपर्क में रहकर ही मिल सकती है। आदर्श वादियों की भांति होने से बताया कि शिक्षा के मुख्य उद्देश्य बालक का आध्यात्मिक विकास कर के उसके निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना है। ऐसे ही प्रयोजन वादियों की भांति स्वामी जी ने पाश्चात्य देशों की कला उद्योग तथा तकनीकी उपयोगिता को कला के साथ संबंधित करने का सुझाव दिया हैं।

भारत के आधुनिक शिक्षा चिंतकों के बीच डॉक्टर राधाकृष्णन का स्मरण इसलिए स्वाभाविक तौर पर होता है कि उन्होंने सर्वप्रथम आदि भारत में शिक्षा के लिए स्वरूप की संकल्पना की। । एक प्रतिष्ठित दार्शनिक, राजनेता और भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षा को अधिक विद्वतापूर्ण और शैक्षणिक दृष्टिकोण से देखा। भारतीय और पश्चिमी दोनों दर्शनों से प्रभावित, राधाकृष्णन ने आलोचनात्मक सोच, तर्कसंगत पूछताछ और अपने लिए ज्ञान की खोज के महत्व पर जोर दिया। उनका शैक्षिक दर्शन गहन मानवतावादी था, जो बुद्धि के विकास, नैतिक चरित्र और सांस्कृतिक परिष्कार पर केंद्रित था। राधाकृष्णन सहिष्णुता, समझ और वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका में विश्वास करते थे। उन्होंने शिक्षा में विभिन्न विषयों के एकीकरण और पूर्वी और पश्चिमी विचारों के संश्लेषण पर जोर दिया।

वास्तव में शिक्षा दर्शन का व्यवहारिक रूप है और दर्शन शिक्षा का वैधानिक रूप है। दर्शन के इतिहास पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री प्रसिद्ध दार्शनिक भी हुए। शिक्षा और दर्शन के बीच अनन्याश्री संबंध है जो दर्शन का लक्ष्य निर्धारित करता है एवं लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ही शिक्षा उपाय प्रस्तुत करता हैं। प्राचीन काल से आज तक दर्शन और शिक्षा का संबंध बहुत निकट रहा है जो समय एवं परिस्थितियों के बदलते के कारण बदलते हैं। जब-जब दर्शन में परिवर्तन हुआ तब-तब शिक्षा क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। दर्शन जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ही शिक्षा और पाठ्यक्रम के बीच घनिष्ठ संबंध जुड़ा हुआ है । जो प्रश्न

उपयुक्त पाठ्यक्रम पुस्तक के चुनाव करता है और इसमें भी दर्शन सन्निहित रहता है। जो बात पाठ्यक्रम के संबंध में है वही बात शिक्षण विधि के संबंध में भी की जा सकती है। लक्ष्य विधि का निर्धारण तो जबकि मानव लक्ष्य दर्शन का विषय है। इसके अनुरूप की तरह अनुशासन के विषय से भी दर्शन का महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय शिक्षा दर्शन पर शिक्षा की निर्भरता पाठ्यक्रम संबंधी समस्याओं के संबंध में दिखाई देती है। समकालीन ईश्वर वादी भारतीय शिक्षा दार्शनिक पृथ्वी पर ईश्वर के राज्य की स्थापना का सपना देखते हैं। इसीलिए इस प्रस्तावित शोध का विषय शिक्षा दर्शन है।

शिक्षा वह प्रवेश द्वार है जिसके द्वारा विद्यार्थी के समस्त शारीरिक,मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक शक्तियों का विकास होता है।। इसीलिए उन्होंने भारतीय शिक्षा में बदलते समय के अनुसार उन्होंने अनेक परिवर्तनों के सपने देखे थे। वे अच्छे स्वास्थ्य और नई शिक्षा दृष्टि के आदर्श और व्यवहार के बीच विद्यमान अंतर को दूर करने में समर्थ हो। उन्होंने शिक्षा को ऐसे स्वरूप में देखा है जिससे वे न केवल शिक्षक, अभिभावक एवं छात्र बल्कि संपूर्ण समाज समान रूप से रुचि लें।। डॉ. राधाकृष्णन ने आध्यात्मिक, व्यवहारिक मौलिकता पर आधारित शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था पर बल दिए। डॉ. राधाकृष्णन मानते थे कि शिक्षा का सबसे पहला सोपान मनुष्य की उसकी घर होता है और उसके माता-पिता पहले अध्यापक होते हैं। एक आदर्श बच्चा ही आगे चलकर बेहतर शिक्षा पाने के बाद एक अच्छा आदमी बन सकता है। स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन आध्यात्मिकता, आत्म-बोध और व्यावहारिक अनुप्रयोग में निहित था और डॉ. राधाकृष्णन का दर्शन बौद्धिक जांच, मानवतावाद और विविध ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण की ओर झुका हुआ था। दोनों विचारकों ने अलग-अलग दृष्टिकोण से, भारत और उसके बाहर शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(2) साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा (Preliminary review of literature):

घोष, डॉक्टर गोविंद चरण, समकालीन भारतीय दर्शन, प्रोग्रेसिभ पब्लिशर, कलकाता(700073)- "स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण की वकालत की। विवेकानन्द ने ऐसी शिक्षा के विचार को बढ़ावा दिया जो जाति, पंथ, धर्म या राष्ट्रीयता की संकीर्ण सीमाओं से परे हो। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना की जो सार्वभौमिक भाईचारे, सहिष्णुता और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा दे। दूसरी और राधाकृष्णन का

शिक्षा दर्शन ऐसे सर्वांगीण व्यक्तियों के विकास पर जोर देता है जो बौद्धिक रूप से जिज्ञासु, नैतिक रूप से ईमानदार, सांस्कृतिक रूप से जागरूक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार हों, जो दुनिया में सार्थक योगदान देने में सक्षम हों"।

बंदोपाध्याय ,डॉक्टर निखिलेश, बिशं शताब्दीर भारतीय दर्शन, स्वदेश पब्लिशर कलकाता (2012)-"स्वामी विवेकानंद जी ने व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा की बात करते थे। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा आत्मा विकास के एक प्रक्रिया है। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा की आवश्यकता हैं चरित्र निर्माण के लिए, मानसिक शक्ति के लिए, बुद्धि विकसित करने के लिए जिससे व्यक्ति आत्म निर्भर हो सकता है"।

कुमार शर्मा, हरेंद्र , बी पांडे ,डॉक्टर कौशिक,डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिपेक्ष मैं सार्थकता,International journal,ISSN:2320-2882, (2023)-"डॉ. राधाकृष्णन ने पूर्वी और पश्चिमी परंपराओं के एकीकरण में निहित शिक्षा दर्शन की वकालत की। वह अकादमिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के महत्व में विश्वास करते थे, चरित्र और मूल्यों के विकास पर जोर देते थे। उनका दर्शन इस विचार पर केंद्रित था कि शिक्षा को व्यक्तियों को सार्थक जीवन जीने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए सशक्त बनाना चाहिए"।

स्वामी विवेकानंद जी के अंदर भारतीयता तथा आध्यात्मिकता कूट-कूट कर भरी हुई थी। वेदान्त और उपनिषद स्वामीजी के शिक्षादर्शन का आधार था। स्वामीजी के अनुसार प्रत्येक प्राणी में आत्मा है। इस आत्मा को जानना ही धर्म है। विवेकानंद मानते थे कि सभी प्रकार का ज्ञान मनुष्य के मन में हैं। अभी तक इसकी खोज नहीं हो पाई है। यह ढका ही रह जाता है। अर्थात स्वामी जी कहना है कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को सीखा नहीं सकता। हर व्यक्ति स्वयं ही सीखता है। "शिक्षक तो केवल सुझाव ही प्रस्तुत करता है जिससे भीतरी शिक्षक को समझने और सीखने के लिए प्रेरणा मिल जाती है।"[2] इसी दृष्टि से स्वामी जी लोगों से कहा- "हम उस व्यक्ति को शिक्षित कहते हैं जिन्होंने कुछ परीक्षायें पास कर ली हो तथा अच्छे भाषण दें सकता हो। पर वास्तव में यह सच है कि शिक्षा का उद्देश्य है जनसाधारण को सांसारिक जीवन में आने वाले संघर्ष के लिए तैयार करना, मानवीय चरित्र का निर्माण करना, हर व्यक्ति में समाजसेवा की भावना को विकसित करना, साहस पैदा करना। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा की आवश्यकता हैं चरित्र निर्माण के लिए, मानसिक शक्ति के लिए, बुद्धि विकसित करने के लिए जिससे व्यक्ति आत्म निर्भर हो सकता है। इस प्रकार शिक्षा आत्म विकास की प्रक्रिया है।

दत्ता ने “अद्वैत वेदांत और महान सार्वभौमिक हृदय बुद्ध के संदर्भ में विवेकानंद के दर्शन का अध्ययन किया।”[3] जिसके निष्कर्ष इस प्रकार थे- स्वामी विवेकानंद मनुष्य का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास, वृद्धि ,प्रगति पर सर्वोत्तमुखी पूर्णता चाहते थे। स्वामी जी गहन मननशील विवेकशील और निर्ण निर्णयशील थे उनकी आत्मा के अनेक पक्ष थे जैसे हीरे की सुंदरता को चमक दोनों तरफ हो। एक पक्ष में गौतम बुद्ध के मानवतावाद प्रतिबिंबित किया और दूसरे पक्ष, जो शायद अधिक प्रभावशाली था, जिसमें शंकर के अद्वैत वेदांत को ग्रहण किया। भारतीय दर्शन का महत्व एक ही स्तम्भ पर नहीं टिका है इसके कम से कम तीन स्तम्भ है अद्वैत वेदान्त, बुद्धवाद और विवेकानन्द का दर्शन।भारतीय दर्शन त्रिपक्षीय था जिसका तीसरा पक्ष स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रस्तुत किया गया। लेकिन यह दर्शन रामकृष्ण से उन्हें प्राप्त हुआ जो विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों के जनक थे। विवेकानन्द ने भारतीय दर्शन का वृत्तखण्ड पूरा किया। जिसका प्रारम्भ वेद, उपनिषद, बुद्ध और शंकर ने किया था। वह मानव के उत्थान में सार्वभौमिक बंधुत्य में विश्वास करते थे। नवीन समाज की स्थापना राष्ट्रीय उद्देश्य और उन्हें विकास के साथ जोड़ने की प्राथमिकता की आवश्यकता थी। इसके अलावा स्वामी विवेकानंद स्त्रियों शिक्षा के प्रति जोर देते हैं। उनका विश्वास था कि स्त्रियों में से एक भी ब्रह्म ज्ञानी हो गई तो उसका व्यक्तित्व के तेज से सहस्रा स्त्रियां सत्तो के प्रति जागृत हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि ‘किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहां की महिलाओं की साथ होने वाला व्यवहार।”[4]

डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास की प्रक्रिया मानते है तथा शिक्षा को ऐसा साधन मानते हैं जो व्यक्ति तथा समाज को प्रगति देता है एवं विकास को गति प्रदान करता है। डॉ. राधाकृष्णन् मानते हैं कि ज्ञान व्यक्ति के अन्दर निहित है। वह स्वभावः आत्मबोध करने में समर्थ है किन्तु बाह्य विषयों की आसक्ति से व्यक्ति का आत्म तत्व कलुषित रहता है। यही कारण है कि मनुष्य सर्वदा समीपस्थ होने पर भी उस आत्म तत्व का ढके हुये दर्पण के समान दर्शन नहीं कर पाता है। शिक्षा द्वारा जब व्यक्ति के इन्द्रिय एवं विषयजन्य रोगादि दोषों के दूर होने के वाद मन जल के समान शान्त हो जाता है। उसके वाद ही यथार्थ तत्व का अज्ञान से अनावरण होता है, यही डॉ. राधाकृष्णन् का शिक्षा है। शिक्षा के लिये शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम यह तीनों आवश्यक है। इन तीनों के अन्तःक्रिया को ही शिक्षा कहते हैं। शिक्षा स्वरूपतः आध्यात्मिक एवं धार्मिक है। “डॉ.राधाकृष्णन के अनुसार धर्म का लक्ष्य स्वयं के भीतर परमात्मा की प्राप्ति करना है। उन्होंने धर्म में सहिष्णुता, समझ और सत्य की खोज के महत्व पर जोर दिया। उनके अनुसार, धर्म व्यक्तियों को व्यक्तिगत विकास, नैतिक

विकास, दूसरों के साथ सद्भाव और आध्यात्मिक विकास के लिए प्रेरित करता है।"[5] डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा का महत्व है हमें एक दूसरों के साथ सहयोग से साथ-साथ रहे।

डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार व्यक्ति एवं समाज के विकास के लिए शिक्षा की उपयोगी है। व्यक्ति के लिये शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुये उनका विचार है कि शिक्षा से मनुष्यों को आध्यात्मिक विकास प्राप्त होता है। शिक्षा से ही व्यक्ति अपना आचरण, व्यवहार, मानसिकता तथा विचार विकसित हो जात हैं। व्यक्ति का जीवन उत्कृष्टतर हो कर श्रेष्ठ मानव बन जाता है। उत्कृष्टतर मानव ही समाज में शान्ति तथा समृद्धि ल सकता है। "डॉ. राधाकृष्णन एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें विभिन्नताओं को रहते हुए सामाजिक एकता हो। इसके लिए वह समाज के रूपांतरण पर बोल देते हैं। डॉ. राधाकृष्णन सामाजिक रूपांतरण के लिए सत्तो की खोज तथा सामाजिक उन्नति के कार्यों के रूप में शिक्षा की कल्पना करते हैं जिससे एक सभ्यता का निर्माण किया जा सके।"[6]

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा मनुष्य की विकास प्राप्ति का एक माध्यम है। शिक्षा के द्वारा आत्म विकास सम्भव है तथा शिक्षा से ही नैतिक विकास हो सकता है । शिक्षा के द्वारा ही समाज में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाये जा सकते है। इस प्रकार, हम देखते है कि डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार आध्यात्मवाद शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार है। अपने आध्यात्मिक विकास के लिये मनुष्यों को अवश्य ही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। आधुनिक युग में शिक्षा को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन माना जाता है। इसलिए वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य भौतिक कामना पूर्ति के लिए होता जा रहा है।

ऐसी स्थिति में डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा का बहुत ही महत्वपूर्ण है। क्योंकि आध्यात्मिकता का महत्व हर एक युग में प्रासंगिक है । डॉ. राधाकृष्णन् आपने दर्शन में जीवन मूल्यों की महत्व को स्वीकार करते हुये कहते हैं कि वर्तमान में जो संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हुई है, उसका कारण यह है कि मानवीय चेतना एवं आध्यात्मवाद को नजर अंदाज करना। हर व्यक्ति आध्यात्मिकता को उपेक्षा कर रहे हैं और भौतिकता को बढ़ावा दे रहे है। परंतु उन्होंने आपने जीवन में आध्यात्मिकता को स्पष्ट रूप से महत्व देते थे और शिक्षा की आवश्यकता को भी अनुभव करते थे। इस प्रकार आधुनिक शैक्षिक सन्दर्भ में डॉ. राधाकृष्णन् की शिक्षा के स्वरूप को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।

(3) समस्या का विधान (statement of the problem):

आधुनिक युग में भौतिकवाद का प्राधान्य होने से शिक्षा को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन माना जाता है। अतः आज की शिक्षा का स्वरूप भौतिकवादी और आत्म-केंद्रित हो गया है| मनुष्य अपने बाह्य विषयों की आसक्ति के कारण ही अपने नैतिक , सामाजिक ,आध्यात्मिक और मानवता को उपेक्षा कर रहा है। इसी कारण व्यक्ति आज हिंसा, सांप्रदायिकता और जातिवाद से पीड़ित है| ऐसी गंभीर स्थिति में स्वामी विवेकानंद और डॉ राधाकृष्णन की शिक्षा दर्शन की अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है| स्वामी विवेकानंद और डॉ राधाकृष्णन अपने जीवन काल में सभी भारतीयों को एकजुट करने एवं मनुष्य की आंतरिक गुणों की विकास करने के लिए हमेशा कोशिश करते रहे| मेरा यह प्रस्तावित शोध कार्य स्वामी विवेकानंद और डॉ राधाकृष्णन की शिक्षा दर्शन का एक दर्पण होगा|

(4) समस्या की अनुसंधान (Problem to be investigated):

इस शोध में शिक्षा के सभी विद्याओं , सभी प्रकार के पाठ्यक्रमों एवं शिक्षार्थी की सभी आवश्यकताओं को सभी प्रकार के विकास में उचित स्थान दे सके समस्याओं को दार्शनिक विधि से ही सुलझाने का प्रयास के लिए स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा दर्शन का अनुसंधान किया जाएगा। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं पाश्चात्य तकनीकी शिक्षा का विकास के लिऐ स्वामी विवेकानंद एवं डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा दर्शन की अबदानों का अनुसंधान किया जाएगा | इसके अलावा यह भी चर्चा किया जाएगा के वर्तमान में स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा व्यवस्था कितना सार्थक, प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है|

(5) शोध का उद्देश्य (Objective of the research):

इस शोध कार्य का उद्देश्य स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर राधाकृष्णन का दर्शन में शिक्षा की महत्ता एवं व्यापकता का विवेचन करता है, उनके अंतर्निहित सिद्धांतों, पद्धतियों और समकालीन शिक्षा प्रणालियों के लिए निहितार्थों की खोज करता है, इसके अतिरिक्त स्वामी विवेकानंद और डॉ.राधाकृष्णन द्वारा प्रस्तुत शिक्षा दर्शन से संबंधित विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करता है।

(6) परिकल्पना (Hypothesis):

इस शोध कार्य में स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर राधाकृष्णन से संबंधित सभी शैक्षिक विचारों का पृथक पृथक अध्ययन और तुलना करने के पश्चात एक समग्र एवं सर्व समावेशी दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है।

(7) शोधप्रारूप प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति (Recharge design and methodology):

इस शोध कार्य हेतु विभिन्न पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन किया जाएगा। स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर राधाकृष्णन के विचारों के विशेष संदर्भ में इस शोध कार्य के लिए पुस्तकों का आलोचना विधि को सहायता ली जाएगी।

(8) तथ्य संकलन (Data collection):

तथ्य संकलन हेतु विभिन्न पुस्तकालय का तथ्य लिया जाएगा और उन पुस्तकालयों में उपलब्ध इसका संबंध दार्शनिक विचारों से संबंध पुस्तकों का अध्ययन कर सामग्री एकत्रित की जाएगी। शोध के क्रम में विषय से संबंधित प्रमुख चिंतकों को एवं विचारों के द्वारा प्रकाशित लेख रचनाओं संबंधित इत्यादि से सहायता ली जाएगी। इस प्रकार विभिन्न स्रोतों से तथ्य विश्लेषण किया जाएगा, साथ ही इंटरनेट पर तथ्य विश्लेषण किया जाएगा और विश्वसनीय जानकारी की भी सहायता ली जाएगी।

(9) शोध कार्य का महत्व (significance of proposed work):

समकालीन भारतीय दर्शन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि शिक्षा मानव जीवन के लिए परम आवश्यक है ।इस शोध कार्य में शिक्षा से संबंधित दृष्टिकोण, सर्वाग्रह मनोविज्ञान, आदर्शवाद और व्यवहारिक बाद का सामान्य मानव के आध्यात्मिक व्याख्या ,विविध पाठ्यक्रम, शिक्षा का माध्यम भारत की सर्वोच्च मातृभाषा शिक्षा में राष्ट्रवाद का उल्लेख किया गया है, जो मानव जीवन के लिए जरूरी है । इस शोध कार्य में समकालीन भारतीय दार्शनिकों के शिक्षा संबंध स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अलग-अलग विचारों की तुलनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

(10) वर्तमान ज्ञान में योगदान(Contribution to the existing knowledge):

वर्तमान समय में स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन ,शिक्षा शोध इत्यादि शिक्षा के सभी महत्वपूर्ण विद्याओं में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि इन दो महान शिक्षा शास्त्रियों ने आध्यात्मिक और व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया है। उन्होंने ऐसी शिक्षा पद्धति की वकालत की जो आधुनिक व्यवस्था के अनुरूप हो ,ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थी को आजीविका का साधन भी उपलब्ध करवाएं एवं उनके चरित्र निर्माण में भी सहायक हो।

(11) अनुसंधान की सीमाएं (Limitation of the research work):

इस शोध अध्ययन में ' स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शनो का तुलनात्मक अध्ययन' में शोधकर्जी ने अध्ययन को सुनिश्चित एवं सुविचारित बनाने के उद्देश्य से सीमाबद्ध करना आवश्यक समझा है। जिससे वह अपने शोध अध्ययन के निर्दिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। क्योंकि शिक्षा दर्शन और जीवन-दर्शन में अटूट सम्बंध होता है। जीवन दर्शन व्यक्ति की अपनी योग्यता, क्षमता, पारिवारिक स्थिति एवं सामाजिक स्थिति से प्रभावित होता है। अत किसी व्यक्ति के जीवन दर्शन को जानने से पूर्व उसकी व्यक्तिगत क्षमता, योग्यता, पारिवारिक दशा व तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से इस अध्ययन में स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर राधाकृष्णन के व्यक्तित्व और दार्शनिक चिंतन का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इन दोनों शिक्षा शास्त्रियों के जीवन दर्शन व शिक्षा दर्शन को प्रमुख आधार मानते हुए उनके धार्मिक आध्यात्मिक व शैक्षिक पहलुओं का सविस्तार अध्ययन किया गया है। इनके सामाजिक व आध्यात्मिक पक्षों को अध्ययन से जुड़ कर स्वामी विवेकानं और डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शनों का विश्लेषण, विवेचन एवं तुलना को इस अध्ययन के क्षेत्र में सम्मिलित किया है। सम सामयिक अन्य शिक्षा विदों के कार्यों व शिक्षा-दर्शन से इसे मुक्त रक्खा गया है।

(12) भविष्य में कार्य होने को संभावना(Future work):

शिक्षा मनुष्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह शोध विषय वर्तमान में ही नही भविष्य में भी उपयोगी होगा ,क्योंकि शिक्षा सर्वो युगीन आवश्यकता है। शिक्षा पद्धति हर युग हर समय में भले ही भिन्न-भिन्न रही हो परंतु शिक्षा से ही मनुष्य का सर्वागीण विकास हो सकता है वह निर्विवाद रूप से सत्य है। क्योंकि शिखा का महत्व किसी भी

युग में सर्वथा समाप्त नहीं होता है। समाज और मानव जीवन में जब-जब संकट पूर्ण स्थिति उत्पन्न होगी तब-तब शिखा की महत्व का आवश्यकता भी अनुभव होने लगती है। अर्थात इस विश्व में जबतक समाज होगा और उस समाज में रहने वाले मनुष्य होगा तबतक शिखा की आवश्यकता होगी। इसीलिए शिक्षा में शोध कार्य होने की भविष्य में भी असीम संभावनाएं है।

(13) संभावित अध्याय(Tentative chapterization):

अध्ययन की सुविधा के लिए शोध कार्य के विषय को निम्नलिखित संभावित अध्यायों में विभक्त किया गया है।

भूमिका-

प्रथम अध्याय- शिक्षा दर्शन में प्राचीन दार्शनिको के विचार।

द्वितीय अध्याय- स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन की जीवनी।

तृतीय अध्याय- स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन।

चतुर्थ अध्याय- डॉक्टर राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन।

पंचम अध्याय- स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन।

षष्ठ अध्याय - स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

निष्कर्ष-

भूमिका:

शिक्षा दर्शन में, स्वामी विवेकानंद और डॉ.राधाकृष्णन की शिक्षाएँ गहन स्तंभों के रूप में खड़ी हैं, जो शिक्षा को समझने के हमारे तरीके और समाज में इसकी भूमिका को आकार देती हैं। वर्तमान समय में भौतिकवाद का प्राधान्य होने से शिक्षा को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन माना जाता है। मनुष्य अपने बाह्य विषयों की आसक्ति के कारण ही अपने मानवता को भूल रहा है। इसी कारण व्यक्ति आज हिंसा, जातिवाद, सांप्रदायिकतावाद, से पीड़ित है| ऐसी गंभीर स्थिति में स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षा दर्शन की अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है| स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन अपने जीवन काल में सभी भारतीयों को एकजुट करने एवं मनुष्य की आंतरिक गुणों की विकास करने के लिए हमेशा कोशिश करते रहे|

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के माध्यम से आत्म-बोध, चरित्र निर्माण और शैक्षिक पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता के एकीकरण के महत्व को रेखांकित किया। जिससे न केवल बौद्धिक विकास बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान भी बढ़े। दूसरी ओर, डॉ. राधाकृष्णन ने पूर्वी और पश्चिमी दर्शन में सामंजस्य स्थापित, आलोचनात्मक सोच, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ विकसित करने के लिए शिक्षा की शक्ति में विश्वास करते थे। अपने अलग-अलग दृष्टिकोणों के बावजूद, विवेकानन्द और राधाकृष्णन दोनों का एक ही लक्ष्य था: समाज की भलाई के लिए शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति का उपयोग करना। इस तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से, हमारा लक्ष्य उनके शैक्षिक दर्शन में गहराई से उतरना, उनके अंतर्निहित सिद्धांतों, पद्धतियों और समकालीन शिक्षा प्रणालियों के लिए निहितार्थों की खोज करना है। जो वर्तमान समय में शैक्षिक प्रथाओं को सूचित और समृद्ध कर सकती है।

प्रथम अध्याय-शिक्षा दर्शन में प्राचीन दार्शनिको के विचार:

प्राचीन दार्शनिको ने शिक्षा दर्शन में नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर ध्यान देने के साथ समग्र विकास पर जोर दिया। वे गुरु-शिष्य परंपरा में विश्वास करते थे, जहां शिक्षक न केवल ज्ञान बल्कि जीवन की शिक्षा भी देते थे। धर्म और कर्म जैसी अवधारणाओं ने शिक्षा का मूल बनाया, छात्रों को एक सदाचारी जीवन जीने और अपनी सामाजिक भूमिकाओं को पूरा करने की शिक्षा दी। शिक्षा को आत्म-साक्षात्कार और मुक्ति प्राप्त करने के साधन के रूप में देखा जाता था, जिसका लक्ष्य ब्रह्मांड के साथ व्यक्ति का सामंजस्य स्थापित करना था। चाणक्य जैसे दार्शनिको ने व्यावहारिक शिक्षा पर जोर दिया, सैद्धांतिक ज्ञान को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग के साथ एकीकृत किया, जबकि आदि शंकराचार्य जैसे अन्य दार्शनिको ने अंतिम वास्तविकता को समझने के मार्ग के रूप में ज्ञान की

खोज की वकालत की। कुल मिलाकर, प्राचीन भारतीय दार्शनिको शिक्षा को आत्मज्ञान और आत्म-खोज की दिशा में एक यात्रा के रूप में देखते थे, जो व्यक्तियों को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन करती थी।

सुकरात से लेकर कन्फ्यूशियस तक के प्राचीन दार्शनिको ने सदाचार, आलोचनात्मक सोच और नैतिक विकास की खेती पर जोर दिया। प्लेटो ने सहज ज्ञान की खोज करने और एक आदर्श समाज बनाने के साधन के रूप में शिक्षा की वकालत की। अरस्तू ने व्यावहारिक कौशल के महत्व और शिक्षा के माध्यम से खुशी की खोज पर जोर दिया। कन्फ्यूशियस ने सामाजिक सद्भाव और व्यक्तिगत अखंडता को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया। इन दार्शनिको का मानना था कि शिक्षा को मन और चरित्र दोनों का पोषण करना चाहिए, जिससे व्यक्ति ज्ञान और सदाचारी जीवन की ओर अग्रसर हो।

द्वितीय अध्याय-स्वामी विवेकानंद और डॉक्टर राधाकृष्णन की जीवनी:

स्वामी विवेकानन्द, जिनका जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता, भारत में हुआ था, उनका बालों नाम था नरेंद्रनाथ दत्ता। एक आध्यात्मिक नेता, दार्शनिक और वेदांत और योग के भारतीय दर्शन को पश्चिमी दुनिया में पेश करने वाले प्रमुख व्यक्ति थे। वह अपने गुरु, श्री रामकृष्ण से गहराई से प्रभावित थे और हिंदू धर्म और इसके मूल मूल्यों के पुनरुद्धार के लिए एक उत्साही वकील बन गए।1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में विवेकानंद के प्रसिद्ध भाषण ने पश्चिम में हिंदू धर्म का परिचय दिया, जिसमें धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों की सार्वभौमिकता पर जोर दिया गया। उनकी वाक्पटुता और करिश्मा ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिससे उन्हें व्यापक पहचान मिली।

अपने पूरे जीवन में, विवेकानंद ने निस्वार्थ सेवा के महत्व और ध्यान और आध्यात्मिक प्रथाओं के माध्यम से किसी की दिव्यता की प्राप्ति पर जोर दिया। उन्होंने इन शिक्षाओं का प्रचार करने और शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करते हुए मानवता की सेवा करने के लिए रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।स्वामी विवेकानन्द की विरासत दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रेरित करती रहती है, और उनकी शिक्षाएँ समसामयिक मुद्दों को संबोधित करने और विविध संस्कृतियों और धर्मों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने में

प्रासंगिक बनी हुई हैं। 4 जुलाई, 1902 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनके विचार और आदर्श आज भी साधकों को आध्यात्मिकता और सेवा के मार्ग पर ले जाते हैं।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक, विद्वान और राजनेता थे, जिनका जन्म 5 सितंबर, 1888 को तिरुत्तानी, मद्रास प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश भारत (तमिलनाडु) में हुआ था। वह एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद थे, जिन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में मास्टर डिग्री और दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट सहित कई डिग्रियां अर्जित कीं। राधाकृष्णन का शैक्षणिक करियर फला-फूला और वे पूर्वी और पश्चिमी दर्शनशास्त्र के एक सम्मानित अधिकारी बन गए।उनके शानदार करियर में आंध्र विश्वविद्यालय और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्य करना शामिल था। राधाकृष्णन की बौद्धिक क्षमता और दर्शनशास्त्र की गहरी समझ के कारण वे सोवियत संघ और बाद में संयुक्त राष्ट्र में भारत के राजदूत बने।

1952 में, उन्हें भारत के पहले उपराष्ट्रपति के रूप में चुना गया और 1962 में, उन्होंने भारत के राष्ट्रपति की भूमिका निभाई। राधाकृष्णन के राष्ट्रपति पद को शिक्षा, संस्कृति और शांति के प्रति उनकी गहन प्रतिबद्धता द्वारा चिह्नित किया गया था। वह सभ्यताओं के बीच आपसी समझ और सम्मान की वकालत करते हुए पूर्वी और पश्चिमी दर्शन के बीच की खाई को पाटने के महत्व में विश्वास करते थे।अपने राजनीतिक और कूटनीतिक योगदान से परे, राधाकृष्णन एक प्रसिद्ध लेखक थे, जिन्होंने दर्शन, धर्म और संस्कृति पर कई रचनाएँ लिखीं। उनकी सबसे उल्लेखनीय कृतियों में "द फिलॉसफी ऑफ रवीन्द्रनाथ टैगोर" और "इंडियन फिलॉसफी" शामिल हैं।

राष्ट्रपति के रूप में अपना कार्यकाल समाप्त होने के बाद भी, राधाकृष्णन अपने लेखन और शिक्षाओं के माध्यम से पीढ़ियों को प्रेरित करते रहे। शिक्षा और ज्ञान के प्रति उनके समर्पण का सम्मान करते हुए, उनका जन्मदिन, 5 सितंबर, भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन की विरासत दुनिया भर के विद्वानों, दार्शनिकों और नेताओं को प्रभावित करती रही है, क्योंकि वह भारत और उसके बाहर ज्ञान, कूटनीति और बौद्धिकता के प्रतीक बने हुए हैं।

तृतीय अध्याय - स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन:

विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन बौद्धिक, नैतिक और भौतिक पहलुओं को एकीकृत करते हुए समग्र विकास पर जोर देता है। उनके अनुसार, शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तियों के भीतर पहले से मौजूद पूर्णता को प्रकट करना होना चाहिए। शिक्षा को संपूर्ण व्यक्ति - मन, शरीर और आत्मा - के विकास को बढ़ावा देना चाहिए। यह केवल ज्ञान प्राप्त करने के बारे में नहीं है बल्कि चरित्र निर्माण और आध्यात्मिक विकास के बारे में भी है। शिक्षा केवल किताबों और कक्षाओं तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें व्यावहारिक कौशल और वास्तविक जीवन के अनुभव भी शामिल होने चाहिए। विवेकानन्द ने आधुनिक और वैज्ञानिक शिक्षा की वकालत करते हुए आध्यात्मिक विकास के महत्व पर भी जोर दिया। उनका मानना था कि सच्ची शिक्षा से व्यक्ति को आंतरिक दिव्यता का एहसास होना चाहिए और सभी प्राणियों के अंतर्संबंध की समझ होनी चाहिए। विवेकानन्द का मानना था कि व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में सफलता के लिए एक मजबूत चरित्र आवश्यक है।विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन वेदांत के सिद्धांतों में निहित है, लेकिन उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना की जो जाति, पंथ या धर्म की परवाह किए बिना समावेशी और सभी के लिए खुली हो। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन ऐसे व्यक्तियों को विकसित करता है जो बौद्धिक रूप से सक्षम, नैतिक रूप से ईमानदार, आध्यात्मिक रूप से जागृत और सामाजिक रूप से जिम्मेदार हों, जो समाज की बेहतरी में सकारात्मक योगदान दे सकें।

चतुर्थ अध्याय -डॉक्टर राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन:

प्रसिद्ध दार्शनिक और भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन समग्र विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और नैतिक मूल्यों के सिद्धांतों पर आधारित है। राधाकृष्णन का मानना था कि शिक्षा को बौद्धिक विकास, नैतिक अखंडता और किसी की सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ को बढ़ावा देना चाहिए। राधाकृष्णन ने पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक ज्ञान के साथ एकीकृत करने, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने और छात्रों के बीच सामाजिक जिम्मेदारी की भावना पैदा करने के महत्व पर जोर दिया। उनका दर्शन इस विचार पर केंद्रित था कि शिक्षा को व्यक्तियों को सार्थक जीवन जीने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए सशक्त बनाना चाहिए।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने पूर्वी और पश्चिमी परंपराओं के एकीकरण में निहित शिक्षा दर्शन की वकालत की। वह अकादमिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के महत्व में विश्वास करते थे, चरित्र और मूल्यों के

विकास पर जोर देते थे। राधाकृष्णन ने शिक्षा की कल्पना समाज में योगदान देने और शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने में सक्षम समग्र व्यक्तियों को विकसित करने के साधन मन है। उनके दर्शन ने सत्य की खोज, आलोचनात्मक सोच, आध्यात्मिक और नैतिक अखंडता की विकास पर जोर दिया। जिससे समाज समाज की समृद्धि हो सके।

पंचम अध्याय - स्वामी विवेकानंद और राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन:

वर्तमान समय में भौतिकवाद का प्राधान्य होने से शिक्षा को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन माना जाता है। आज की शिक्षा का स्वरूप भौतिकवादी हो गया है| ऐसी स्थिति में स्वामी विवेकानंद और डॉ राधाकृष्णन की शिक्षा दर्शन की अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है| स्वामी विवेकानंद और डॉ राधाकृष्णन अपने जीवन काल में सभी भारतीयों को एकजुट करने एवं मनुष्य की आंतरिक गुणों की विकास करने के लिए हमेशा कोशिश करते रहे| स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के माध्यम से आत्म-बोध, चरित्र निर्माण और शैक्षिक पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता के एकीकरण के महत्व को रेखांकित किया। जिससे न केवल बौद्धिक विकास बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान भी बढ़े। दूसरी ओर, डॉ. राधाकृष्णन ने पूर्वी और पश्चिमी दर्शन में सामंजस्य स्थापित, आलोचनात्मक सोच, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ विकसित करने शिक्षा की बात करते थे। उनका मानना था कि शिक्षकों को न केवल ज्ञान प्रदान करना चाहिए बल्कि छात्रों को जिम्मेदार और नैतिक व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित और मार्गदर्शन भी करना चाहिए।जहां विवेकानंद ने व्यावहारिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया, वहीं राधाकृष्णन ने दार्शनिक नींव और नैतिक विकास के महत्व पर जोर दिया। जबकि विवेकानन्द और राधाकृष्णन दोनों के शिक्षा दर्शन में अलग-अलग जोर था। फिर भी उन्होंने समग्र विकास, नैतिक मूल्यों और विविध ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण को बढ़ावा देने का एक साझा लक्ष्य साझा किया। जिससे व्यक्तियों की न केवल बौद्धिक विकास बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान भी बढ़े।

षष्ठ अध्याय - स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

स्वामी विवेकानन्द और डॉ. राधाकृष्णन दोनों के पास शिक्षा पर गहन विचार थे जो आज भी प्रासंगिक हैं। विवेकानन्द ने सर्वांगीण व्यक्तियों के निर्माण के लिए बौद्धिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास के संयोजन से

समग्र शिक्षा पर जोर दिया। राधाकृष्णन ने शिक्षा में पूर्वी और पश्चिमी दर्शन को एकीकृत करने, आलोचनात्मक सोच और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। दोनों ने आत्म-प्राप्ति और सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा की वकालत की, ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ चरित्र की खेती पर जोर दिया। उनके दर्शन वैश्विक स्तर पर शिक्षकों को समावेशी, मूल्य-आधारित शिक्षण वातावरण बनाने के लिए प्रेरित करते हैं जो छात्रों को आधुनिक दुनिया की जटिलताओं से निपटने के लिए तैयार करते हैं। आज की तेजी से बदलती दुनिया में, उनके विचार शिक्षकों को छात्रों के बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करते हैं, उन्हें ज्ञान और करुणा के साथ जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार करते हैं।

निष्कर्ष :

स्वामी विवेकानन्द और डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा संबंधित तुलनात्मक अध्ययन के प्रति दो विशिष्ट दृष्टिकोण का पता चलता है। जहां स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों के समग्र विकास पर जोर दिया, वहीं डॉ. राधाकृष्णन ने आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान के साथ आलोचनात्मक सोच और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने के लिए पूर्वी और पश्चिमी विचारों को एकीकृत करता है। दोनों दार्शनिक ने व्यक्तियों और समाज को आकार देने में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हैं। हम उनकी शिक्षाओं की अलग-अलग दृष्टिकोण की विश्लेषण करके एक व्यापक शिक्षा ढांचा तैयार करने में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं जो व्यक्ति और समाज दोनों की जरूरतों को पूरा करता है।

(14) संदर्भ(Reference):

1.शिक्षा, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 1989,पृ० 6-7

2.शिक्षा, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 1989,पृ० 2

3.दत्ता टी. एस. अद्वैत वेदान्त और महान सार्वभौमिक हृदय बुद्ध के संदर्भ में विवेकानंद के दर्शन का अध्ययन , गोहाटी विश्वविद्यालय , गोहाटी,1970 पी.एच.डी.

4.साहित्य, खण्ड I, 1989, पृ० 324

5.घोष, डॉक्टर गोविंद चरण, समकालीन भारतीय दर्शन, प्रोग्रेसिभ पब्लिशर, कलकाता 700073, 2020 पृ० 162-165

6.कुमार शर्मा, हरेंद्र , बी पांडे ,डॉक्टर कौशिक,डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिपेक्ष मैं सार्थकता,International journal,ISSN:2320-2882, 2023 I

(15) ग्रंथ सूची(Bibliography):

1.ऑड, लक्ष्मी, शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1973

2.कुमार शर्मा, हरेंद्र , बी पांडे ,डॉक्टर कौशिक,डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिपेक्ष मैं सार्थकता,International journal,ISSN:2320-2882,

3.गोयल, राजकुमार और अग्रवाल, मीरा, शिक्षा दर्शन और आत्म-विकास की अवधरणाएं, लाल बुक डिपो, मेरठ, 1999

4.घोष, डॉक्टर गोविंद चरण, समकालीन भारतीय दर्शन, प्रोग्रेसिभ पब्लिशर, कलकाता 700073, 2020

5.तिवारी, उमेश, प्रगतिशील भारत में शिक्षा, आगरा, ज्योति प्रकाशन, 1997

6.प्रेसीडेन्ट राधाकृष्णन, स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स, पब्लि, डिवी, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, 1960

7.बंदोपाध्याय ,डॉक्टर निखिलेश, बोंश शताब्दीर भारतीय दर्शन, स्वदेश पब्लिशर कलकाता 2012

8.युगनायक विवेकानन्द, स्वामी गभीरानन्द, खण्ड 3, 1994

9.राय, सुशील, शिक्षातत्व और शिक्षादर्शन, सोम बुक एजेंसी 2013

10. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली रचनात्मक जीवन, सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1979

11.राधाकृष्णन, सर्वपल्ली हमारी संस्कृति, हिन्द पॉकेट बुक्स, प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1999

12.विवेकानन्द साहित्य, खण्ड ।, 1989

13.विवेकानन्द साहित्य खण्ड 5, 1989

14.विवेकानन्द साहित्य, खण्ड 8, अद्वैत आश्रम, विही ए० टाली रोड, कलकत्ता, 1989

15.विवेकानन्द साहित्य खण्ड 6, अद्वैत आश्रम, डिही ए० टाली रोड, कलकत्ता 1989

16.विद्यालंकार, अवनींद्र कुमार राष्ट्रपति राधाकृष्णन शिक्षा के दार्शनिक आधार, हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1972

17.शिक्षा, सस्कृति और समाज, स्वामी विवेकानन्द, 1985

18.सक्सेना, एन, स्वरूप 2009 शिक्षा दर्शन एवं पाश्चात्य तथा भारतीय शिक्षाशास्त्री, लाल बुक डिपो मेरठ, 2005